

रविवार 7 अप्रैल, 2024

विषय — कल्पना

स्वर्ण पाठ: यशायाह 53: 1

"जोसमाचार हमें दिया गया, उसका किस ने विश्वास किया? और यहोवा का भुजबल किस पर प्रगट हुआ?"

उत्तरदायी अध्ययन: रोमियो 8: 1, 2, 6, 14, 16, 38, 39

- ¹ सो अब जो मसीह यीशु में हैं, उन पर दण्ड की आज्ञा नहीं: क्योंकि वे शरीर के अनुसार नहीं वरन आत्मा के अनुसार चलते हैं।
- ² क्योंकि जीवन की आत्मा की व्यवस्था ने मसीह यीशु में मुझे पाप की, और मृत्यु की व्यवस्था से स्वतंत्र कर दिया।
- ⁶ शरीर पर मन लगाना तो मृत्यु है, परन्तु आत्मा पर मन लगाना जीवन और शान्ति है।
- ¹⁴ इसलिये कि जितने लोग परमेश्वर के आत्मा के चलाए चलते हैं, वे ही परमेश्वर के पुत्र हैं।
- ¹⁶ आत्मा आप ही हमारी आत्मा के साथ गवाही देता है, कि हम परमेश्वर की सन्तान हैं।
- ³⁸ क्योंकि मैं निश्चय जानता हूं, कि न मृत्यु, न जीवन, न स्वर्गदूत, न प्रधानताएं, न वर्तमान, न भविष्य, न सामर्थ, न ऊंचाई,
- ³⁹ न गहिराई और न कोई और सृष्टि, हमें परमेश्वर के प्रेम से, जो हमारे प्रभु मसीह यीशु में है, अलग कर सकेगी॥

पाठ उपदेश

बाइबल

1. निर्गमन 3: 11

- ¹¹ तब मूसा ने परमेश्वर से कहा, मैं कौन हूं जो फिरौन के पास जाऊं, और इस्राएलियोंको मिस्र से निकाल ले आऊं?

2. निर्गमन 4: 2-8, 12, 31

- ² यहोवा ने उससे कहा, तेरे हाथ में वह क्या है? वह बोला, लाठी।

इस बाइबल पाठ को प्लेनफील्ड क्रिश्चियन साइंस चर्च, इंडिपेंडेंट द्वारा तैयार किया गया था। यह किंग जेम्स बाइबल से स्क्रिप्चरल कोटेशन से बना है और मैरीक बकरी एंड्री ने क्रिश्चियन साइंस पाठ्यपुस्तक विज्ञान और स्वास्थ्य से कुंजी के साथ शास्त्र के लिए सहसंबद्ध मार्ग लिया है।

- 3 उसने कहा, उसे भूमि पर डाल दे; जब उसने उसे भूमि पर डाला तब वह सर्प बन गई, और मूसा उसके साम्हने से भागा।
- 4 तब यहोवा ने मूसा से कहा, हाथ बढ़ाकर उसकी पूंछ पकड़ ले कि वे लोग प्रतीति करें कि तुम्हारे पितरों के परमेश्वर अर्थात् इब्राहीम के परमेश्वर, इसहाक के परमेश्वर, और याकूब के परमेश्वर, यहोवा ने तुझ को दर्शन दिया है।
- 5 तब उसने हाथ बढ़ाकर उसको पकड़ा तब वह उसके हाथ में फिर लाठी बन गई।
- 6 फिर यहोवा ने उससे यह भी कहा, कि अपना हाथ छाती पर रखकर ढांप। सो उसने अपना हाथ छाती पर रखकर ढांप लिया; फिर जब उसे निकाला तब क्या देखा, कि उसका हाथ कोढ़ के कारण हिम के समान श्वेत हो गया है।
- 7 तब उसने कहा, अपना हाथ छाती पर फिर रखकर ढांप। और उसने अपना हाथ छाती पर रखकर ढांप लिया; और जब उसने उसको छाती पर से निकाला तब क्या देखता है, कि वह फिर सारी देह के समान हो गया।
- 8 तब यहोवा ने कहा, यदि वे तेरी बात की प्रतीति न करें, और पहिले चिन्ह को न मानें, तो दूसरे चिन्ह की प्रतीति करेंगे।
- 12 अब जा, मैं तेरे मुख के संग हो कर जो तुझे कहना होगा वह तुझे सिखलाता जाऊंगा।
- 31 और लोगों ने उनकी प्रतीति की; और यह सुनकर, कि यहोवा ने इस्राएलियों की सुधि ली और उनके दुः खों पर दृष्टि की है, उन्होंने सिर झुका कर दण्डवत की॥

3. निर्गमन 20: 2, 3

- 2 कि मैं तेरा परमेश्वर यहोवा हूं, जो तुझे दासत्व के घर अर्थात् मिस्र देश से निकाल लाया है॥
- 3 तू मुझे छोड़ दूसरों को ईश्वर करके न मानना॥

4. यूहन्ना 2: 1, 3-5, 7-11

- 1 फिर तीसरे दिन गलील के काना में किसी का ब्याह था, और यीशु की माता भी वहां थी।
- 3 जब दाखरस घट गया, तो यीशु की माता ने उस से कहा, कि उन के पास दाखरस नहीं रहा।
- 4 यीशु ने उस से कहा, हे महिला मुझे तुझ से क्या काम? अभी मेरा समय नहीं आया।
- 5 उस की माता ने सेवकों से कहा, जो कुछ वह तुम से कहे, वही करना।
- 7 यीशु ने उन से कहा, मटकों में पानी भर दो: सो उन्होंने ने मुँहामुँह भर दिया।
- 8 यीशु ने उन से कहा, अब निकालकर भोज के प्रधान के पास ले जाओ।

- 9 वे ले गए, जब भोज के प्रधान ने वह पानी चखा, जो दाखरस बन गया था, और नहीं जानता था, कि वह कहां से आया है, (परन्तु जिन सेवकों ने पानी निकाला था, वे जानते थे) तो भोज के प्रधान ने दूल्हे को बुलाकर, उस से कहा।
- 10 हर एक मनुष्य पहिले अच्छा दाखरस देता है और जब लोग पीकर छक जाते हैं, तब मध्यम देता है; परन्तु तू ने अच्छा दाखरस अब तक रख छोड़ा है।
- 11 यीशु ने गलील के काना में अपना यह पहिला चिन्ह दिखाकर अपनी महिमा प्रगट की और उसके चेलों ने उस पर विश्वास किया॥

5. मत्ती 8: 1-4, 14-16, 18, 24-26

- 1 जब वह उस पहाड़ से उतरा, तो एक बड़ी भीड़ उसके पीछे हो ली।
- 2 और देखो, एक कोढ़ी ने पास आकर उसे प्रणाम किया और कहा; कि हे प्रभु यदि तू चाहे, तो मुझे शुद्ध कर सकता है।
- 3 यीशु ने हाथ बढ़ाकर उसे छूआ, और कहा, मैं चाहता हूं, तू शुद्ध हो जा और वह तुरन्त कोढ़ से शुद्ध हो गया।
- 4 यीशु ने उस से कहा; देख, किसी से न कहना परन्तु जाकर अपने आप को याजक को दिखला और जो चढ़ावा मूसा ने ठहराया है उसे चढ़ा, ताकि उन के लिये गवाही हो।
- 14 और यीशु ने पतरस के घर में आकर उस की सास को ज्वर में पड़ी देखा।
- 15 उस ने उसका हाथ छूआ और उसका ज्वर उतर गया; और वह उठकर उस की सेवा करने लगी।
- 16 जब संध्या हुई तब वे उसके पास बहुत से लोगों को लाए जिन में दुष्टात्माएं थीं और उस ने उन आत्माओं को अपने वचन से निकाल दिया, और सब बीमारों को चंगा किया।
- 18 यीशु ने अपनी चारों ओर एक बड़ी भीड़ देखकर उस पार जाने की आज्ञा दी।
- 24 और देखो, झील में एक ऐसा बड़ा तूफान उठा कि नाव लहरों से ढंपने लगी; और वह सो रहा था।
- 25 तब उन्होंने पास आकर उसे जगाया, और कहा, हे प्रभु, हमें बचा, हम नाश हुए जाते हैं।
- 26 उस ने उन से कहा; हे अल्पविश्वासियों, क्यों डरते हो? तब उस ने उठकर आन्धी और पानी को डांटा, और सब शान्त हो गया।

6. मत्ती 24: 4-7, 10-14

- 4 सावधान रहो! कोई तुम्हें न भरमाने पाए।
- 5 क्योंकि बहुत से ऐसे होंगे जो मेरे नाम से आकर कहेंगे, कि मैं मसीह हूं; और बहुतों को भरमाएंगे।
- 6 तुम लड़ाइयों और लड़ाइयों की चर्चा सुनोगे; देखो घबरा न जाना क्योंकि इन का होना अवश्य है, परन्तु उस समय अन्त न होगा।

- 7 क्योंकि जाति पर जाति, और राज्य पर राज्य चढ़ाई करेगा, और जगह जगह अकाल पड़ेंगे, और भुईडोल होंगे।
- 10 तब बहुतेरे ठोकर खाएंगे, और एक दूसरे से बैर रखेंगे।
- 11 और बहुत से झूठे भविष्यद्वक्ता उठ खड़े होंगे, और बहुतों को भरमाएंगे।
- 12 और अधर्म के बढ़ने से बहुतों का प्रेम ठण्डा हो जाएगा।
- 13 परन्तु जो अन्त तक धीरज धरे रहेगा, उसी का उद्धार होगा।
- 14 और राज्य का यह सुसमाचार सारे जगत में प्रचार किया जाएगा, कि सब जातियों पर गवाही हो॥

7. रोमियो 8: 7 (कामुक), 8

- 7 ... शरीर पर मन लगाना तो परमेश्वर से बैर रखना है, क्योंकि न तो परमेश्वर की व्यवस्था के आधीन है, और न हो सकता है।
- 8 और जो शारीरिक दशा में है, वे परमेश्वर को प्रसन्न नहीं कर सकते।

8. रोमियो 12: 2

- 2 और इस संसार के सदृश न बनो; परन्तु तुम्हारी बुद्धि के नये हो जाने से तुम्हारा चाल-चलन भी बदलता जाए, जिस से तुम परमेश्वर की भली, और भावती, और सिद्ध इच्छा अनुभव से मालूम करते रहो॥

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. 200: 4-7

मूसा ने एक राष्ट्र को पदार्थ के बजाय आत्मा में ईश्वर की पूजा करने के लिए आगे बढ़ाया, और अमर मन द्वारा प्रदान की जाने वाली भव्य मानवीय क्षमताओं का वर्णन किया।

2. 321: 6-2

हिब्रू लॉजिवर, भाषण की धीमी गति, लोगों को यह समझने में निराश करती है कि उसे क्या बताया जाना चाहिए। जब, अपने डंडे को गिराने के लिए प्रज्ञा ने नेतृत्व किया, तो उसने देखा कि यह नागिन बन गई है, इससे पहले मूसा भाग गया; लेकिन ज्ञान ने उसे वापस आकर सर्प को संभाल लिया, और तब मूसा का भय दूर हो गया। इस घटना में विज्ञान की वास्तविकता देखी गई थी। बात को केवल एक विश्वास के रूप में दिखाया गया था। ज्ञान की बोली के तहत नागिन, दुष्ट, दिव्य विज्ञान को समझने के माध्यम से नष्ट हो गया था, और यह सबूत एक कर्मचारी था

जिस पर झुकना था। मूसा के भ्रम ने उसे खतरे में डालने की अपनी शक्ति खो दी, जब उसने पाया कि उसने जो स्पष्ट रूप से देखा था वह वास्तव में था लेकिन नश्वर विश्वास का एक चरण था।

यह वैज्ञानिक रूप से प्रदर्शित किया गया था कि कुछ रोग नश्वर मन का निर्माण था और न ही पदार्थ की स्थिति, जब मूसा ने पहली बार उसकी छाती पर हाथ रखा और उसे भयानक बीमारी के साथ बर्फ की तरह सफ़ेद कर दिया, और वर्तमान में एक ही सरल प्रक्रिया द्वारा अपनी प्राकृतिक स्थिति के लिए अपने हाथ को बहाल किया। ईश्वरीय विज्ञान में इस प्रमाण से ईश्वर ने मूसा का भय कम कर दिया था, और भीतर की आवाज़ उसे ईश्वर की आवाज़ बन गई, जिसने कहा: "यदि वे तेरी बात की प्रतीति न करें, और पहिले चिन्ह को न मानें, तो दूसरे चिन्ह की प्रतीति करेंगे।" और इसलिए यह आने वाली शताब्दियों में था, जब यीशु द्वारा विज्ञान का प्रदर्शन किया जा रहा था, जिसने अपने छात्रों को शराब में पानी बदलकर माइंड की शक्ति को दिखाया, और उन्हें सिखाया कि कैसे नागों को संभाला जाए, बीमारों को ठीक किया जाए और बुराइयों को बाहर निकाला जाए। मन की सर्वोच्चता के प्रमाण में।

3. 215: 15-21

कभी-कभी हमें यह विश्वास दिला दिया जाता है कि अंधकार भी उतना ही वास्तविक है जितना कि प्रकाश; लेकिन विज्ञान इस बात की पुष्टि करता है कि अंधकार केवल प्रकाश की अनुपस्थिति का एक नश्वर भाव है, जिसके आने पर अंधकार वास्तविकता का आभास खो देता है। तो पाप और दुःख, बीमारी और मृत्यु, जीवन, ईश्वर की अनुमानित अनुपस्थिति हैं, और सत्य और प्रेम के सामने त्रुटि के प्रेत के रूप में भागते हैं।

4. 135: 26-32

ईसाई धर्म, जैसा कि यीशु ने सिखाया था, न तो कोई पंथ था, न ही समारोहों की एक प्रणाली, न ही अनुष्ठान करने वाले यहोवा का कोई विशेष उपहार; लेकिन यह दैवीय प्रेम का प्रदर्शन था जो त्रुटि को दूर करता था और बीमारों को ठीक करता था, न केवल ईसा मसीह या सत्य के नाम पर, बल्कि सत्य के प्रदर्शन में, जैसा कि दैवीय प्रकाश के चक्रों में होना चाहिए।

5. 269: 9 (इंसान)-11

मानव दर्शन ने ईश्वर को मनुष्य जैसा बना दिया है। क्रिश्चियन साइंस मनुष्य को ईश्वरतुल्य बनाता है। पहली त्रुटि है; उत्तरार्द्ध सत्य है।

6. 205: 15-21

गलती में फंसने से (यह मानने की त्रुटि कि पदार्थ अच्छे या बुरे के लिए बुद्धिमान हो सकता है), धुंध छंटने पर ही हम ईश्वर की स्पष्ट झलक पा सकते हैं, या जब वे इतने पतलेपन में पिघल जाते हैं कि हम किसी शब्द या कार्य में

दिव्य छवि को देखते हैं जो सच्चे विचार को इंगित करता है, - श्रेष्ठता और सत्य की सच्चाई, बुराई की शून्यता और असत्यता।

7. 331: 11 (वह)-17

शास्त्रों का अर्थ है कि ईश्वर सब कुछ है। इससे यह पता चलता है कि ईश्वरीय मन और उनके विचारों के अलावा किसी भी चीज़ में वास्तविकता या अस्तित्व नहीं है। शास्त्र यह भी घोषणा करते हैं कि ईश्वर आत्मा है। इसलिए आत्मा में सब कुछ सामंजस्य है, और कोई मतभेद नहीं हो सकता; सब कुछ जीवन है, और कोई मृत्यु नहीं है। भगवान के ब्रह्मांड में सब कुछ उसे व्यक्त करता है।

8. 207: 8 (ईश्वर)-19

भगवान बुरे दिमाग का निर्माता नहीं है। वास्तव में, बुराई मन नहीं है। हमें सीखना चाहिए कि बुराई अस्तित्व का भ्रामक और असत्य है। बुराई सर्वोच्च नहीं है; अच्छा असहाय नहीं है; न तो पदार्थ के प्राथमिक, और आत्मा के कानून के तथाकथित कानून हैं। इस पाठ के बिना, हम पूर्ण पिता, या मनुष्य के दिव्य सिद्धांत की दृष्टि खो देते हैं।

शरीर पहले और आत्मा अंतिम नहीं है, न ही बुराई अच्छाई से अधिक शक्तिशाली है। अस्तित्व का विज्ञान स्वयं-स्पष्ट असंभवताओं को अस्वीकार करता है, जैसे कारण या प्रभाव में सत्य और त्रुटि का समामेलन। विज्ञान कटाई के समय जंगली पौधों और गेहूँ को अलग करता है।

9. 473: 4 (वह)-6

मन का विज्ञान सभी बुराई का निपटारा करता है। सत्य, ईश्वर, त्रुटि का जनक नहीं है। पाप, बीमारी और मृत्यु को त्रुटि के प्रभावों के रूप में वर्गीकृत किया जाना है।

10. 275: 10-19

वास्तविकता और उसके विज्ञान में होने के क्रम को समझने के लिए, आपको परमेश्वर को उस सभी के दिव्य सिद्धांत के रूप में फिर से शुरू करना चाहिए जो वास्तव में है। आत्मा, जीवन, सत्य, प्रेम, एक के रूप में गठबंधन, - और भगवान के लिए शास्त्र के नाम हैं। सभी पदार्थ, बुद्धि, ज्ञान, अस्तित्व, अमरता, कारण और प्रभाव ईश्वर के हैं। ये उनकी विशेषताएं हैं, अनंत दिव्य सिद्धांत, प्रेम की शाश्वत अभिव्यक्तियाँ। कोई भी ज्ञान बुद्धिमान नहीं है, लेकिन उसका ज्ञान है; कोई सत्य सत्य नहीं है, कोई प्रेम प्यारा नहीं है, कोई जीवन जीवन नहीं है, लेकिन परमात्मा है; कोई अच्छा नहीं है, लेकिन अच्छा भगवान सबसे अच्छा है।

11. 330: 19 (ईश्वर)-24

ईश्वर वही है जो शास्त्र उसे घोषित करते हैं - जीवन, सत्य, प्रेम। आत्मा ईश्वरीय सिद्धांत है, और ईश्वरीय सिद्धांत प्रेम है, और प्रेम मन है, और मन अच्छा और बुरा दोनों नहीं है, क्योंकि ईश्वर मन है; इसलिए वास्तव में मन एक ही है, क्योंकि ईश्वर एक है।

12. 242: 9-14

स्वर्ग के लिए एक रास्ता है, सद्भाव; और ईश्वरीय विज्ञान में मसीह हमें इस मार्ग को दिखाता है। कोई और वास्तविकता नहीं है, अच्छे ईश्वर और उसके प्रतिबिंब को जानने और इंद्रियों के दर्द और सुख से श्रेष्ठ होने के अलावा जीवन की कोई अन्य चेतना नहीं है।

13. 281: 14-17

एक अहंकार, एक मन या आत्मा जिसे ईश्वर कहा जाता है, अनंत व्यक्तित्व है, जो सभी रूप और सुंदरता प्रदान करता है और जो व्यक्तिगत आध्यात्मिक मनुष्य और चीजों में वास्तविकता और दिव्यता को दर्शाता है।

14. 76: 18 (कष्ट)-21

पीड़ा, पाप, मरणासन्न मान्यताएँ अवास्तविक हैं। जब दैवीय विज्ञान को सार्वभौमिक रूप से समझा जाएगा, तो उनका मनुष्य पर कोई अधिकार नहीं होगा, क्योंकि मनुष्य अमर है और दैवीय अधिकार द्वारा जीवित है।

15. 207: 27 केवल

आध्यात्मिक वास्तविकता सभी चीजों में वैज्ञानिक तथ्य है।

दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन

सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्वाणी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6